प्रयाग शुक्ल

ब्रह्मपुत्र के कई नाम हैं

मैं जब भी गुवाहाटी जाता हूँ, ब्रह्मपुत्र के किनारे वाली सड़कों पर सुबह की सैर करता हूँ। वहाँ से ब्रह्मपुत्र की धारा दिखती रहती है। ब्रह्मपुत्र की धारा इतनी बड़ी और चौड़ी है कि उसे नदी न मानकर नद माना जाता है। नदी तो गंगा है। कहते हैं, "गंगा बहती है" पर "ब्रह्मपुत्र बहता है"।

ब्रह्मपुत्र कई देशों से होकर बहता है। हर देश-प्रदेश में इसके नाम अलग-अलग हैं। ब्रह्मपुत्र कैलाश पर्वत के पास से, तिब्बत से निकलता है। वहाँ से अरुणाचल प्रदेश पहुँचता है, जहाँ इसे "दिहांग" कहते हैं। असम में इसे "लुइत" और बांग्लादेश में "पदमा" कहते हैं। यह कई नदियों से मिलता है और बहता रहता है। ब्रह्मपुत्र कुल मिलाकर 1700 किलोमीटर की दूरी तय करता है। और औसतन 4000 मीटर की ऊँचाई पर बहता है। इतनी ऊँचाई पर बहने वाला यह दुनिया का एक खास नद है।

ब्रह्मपुत्र न जाने कब से लाखों लोगों का पेट पाल रहा है – मछुआरों, नाविकों, नाव-डोंगियाँ बनाने वालों, इनकी मरम्मत करने वालों का। ब्रह्मपुत्र के किनारे-किनारे चाय-नाश्ते की दुकानों के मालिकों और कर्मचारियों का। ब्रह्मपुत्र में जब बाढ़ और बारिश का पानी उतर जाता है, तो किनारे-किनारे खेती लायक ज़मीन पर जूट, धान, सरसों आदि की फसलें होती हैं। यानी इसके सहारे पलने वालों की वास्तव में गिनती ही नहीं है।

ब्रह्मपुत्र के किनारे हर वक्त कुछ न कुछ घटता रहता है। इस साल अप्रैल के महीने में मैं तीन-चार दिनों के लिए गुवाहाटी में था। जिस होटल में मैं ठहरा था, वह ब्रह्मपुत्र के किनारे ही है। जब भी देखो, खिड़की से कोई न कोई आकर्षक दृश्य नज़र आ जाता था। एक रात तेज़ बारिश आई। हवा भी खूब तेज़ थी। रह-रहकर बिजली चमकती थी। पेड़ों पर हवा की सांय-सांय लगातार सुनाई देती थी। नींद टूटनी ही थी। वह टूटी और मैं कुछ चौंककर उठ बैठा। खिड़की के पास गया। जब बिजली चमकती तो ब्रह्मपुत्र की जलधारा कौंध उठती। मैं काफी देर तक खिड़की के पास खड़ा रहा। सोचता रहा कि मैं तो संयोग से अभी ब्रह्मपुत्र के किनारे हूँ – उसमें बिजली, बादल और हवा की आँख-मिचौनी देख-सुन रहा हूँ। ऐसे नज़ारे तो यहाँ हरदम बनते-मिटते और बनते रहते होंगे। फिर ब्रह्मपुत्र तो न जाने कितने शहरों-गाँवों, पहाड़ियों-पर्वतों, घाटियों से गुज़रता है। और वह रोज़-रोज़ कई जगहों में, बहुत से दृश्य बनाता होगा। हम उनकी कल्पना ही कर सकते हैं। गुवाहाटी में नावों, स्टीमरों में सवार लोग उसकी लहरों को पार करते हुए दिख जाते हैं। और दिख जाते हैं उनके ऊपर उड़ते पक्षी और बादल। दिख जाते हैं उसके घाट और मन्दिर। उसमें कपड़े धोते-नहाते लोग। उसके किनारे सुबह-शाम सैर करते लोग। ऐसे ही तमाम दृश्य, असम के जाने-माने फिल्मकार जाह्नू बरूआ ने ब्रह्मपुत्र पर बनाई अपनी एक फिल्म में सँजोए हैं। फिल्म एक घण्टे की है, इसमें कई देशों-प्रदेशों से गुज़रते ब्रह्मपुत्र को देखा जा सकता है।

प्रयाग शुक्ल के लेख के अंश